अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 01, (January-March 2023)

फैसला कहानी में वसुमति का चरित्र चत्रण

Dr Kamna Kaushik
Associate Professor Hindi, Vaish College Bhiwani

मैत्रेयी पुष्पा जी का नाम हिंदी साहित्य जगत में कसी परिचय का मोहताज नहीं है ।कथा साहित्य में वशेष योगदान के कारण इनका नाम हिन्दी कथा लेखकों में अत्यंत आदर के साथ लया जाता है ।हिन्दी कहानी को एक नई दिशा और मुक़ाम तक ले जाने में इनके योगदान को अनदेखा नहीं कया जा सकता ।परिवर्तित परिस्थितियों में संबंधों में आई कटुता -बिखराव को इन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से अ भव्यक्त कया और साथ ही साथ सामाजिक यथार्थ का नग्न चत्रण प्रस्तुत करते हुए समाज में व्याप्त हिंसा और स्वार्थ पर अपनी लेखनी चलाई । इन्होंने लोक जीवन की गहरी परतों को उजागर करने हेतु लोक जीवन की नारी पात्रों से अपनी कहानियों का निर्माण कया । इनके लेखन में ब्रज और बुन्देल दोनों संस्कृतियों की झलक के साथ ग्रामीण भारत का साकार चत्र प्रस्तुत हुआ है ।इन्हें हिन्दी अकादमी दिल्ली की उपाध्यक्ष नियुक्त कया गया ।फणीश्वरनाथ रेणु और रांगेय राघव उच्च कोटि के रचनाकारों की श्रेणी में इनका नाम बड़ा ही आदर के साथ लया जाता है ।राष्ट्रीय पत्र -पत्रिकाओं 'सहारा' 'वनिता' में निरंतर लेखन अनुभव से हम सब लाभान्वित होते रहे हैं। मैत्रेयी पुष्पा जी का जन्म एक साधारण परिवार में हुआ ।30 नवम्बर 1944 को उत्तरप्रदेश के अलीगढ़ ज़िले के सकुर्रा नामक गाँव में हुआ था ।स्थानीय पाठशाला से इनकी प्राथ मक शक्षा हुई ।झाँसी के बुंदेलखंड महा वद्यालय से सन् 1962 में इन्होंने बी.ए परीक्षा उत्तीर्ण की ,सन् 1964 में बुंदेलखंड महा वद्यालय झाँसी से ही इन्होंने एम .ए की परीक्षा पास की।मैत्रेयी पुष्पा के पता का नाम पं डत हीरालाल पांडेय तथा माता का नाम कस्तूरी। हीरालाल का जन्म उपाध्याय गोत्र के ब्राह्मण परिवार में हुआ था। मैत्रेयी की माँ कस्तूरी कर्मठ और ईरादों की दृढ़ थी। माँ की मीठी आवाज से अंगड़ाई लेते हुए उठना और रात में राजा-रानी की कहानियों को सुनते-सुनते माँ की बाँहों में सोना मैत्रेयी के नसीब में था ही नही। वह तो माँ के ईशारों पर उठती-बैठती तथा माँ उनके लए ईश्वर की जीती-जागती प्रतिमा थी।माँ की बेरहमी और कड़े अनुशासन में रोते-रोते, पुरुषों की हवसभरी दृष्टि और शोषण के संकटों से जूझते हुए, ठोकरे खाते हुए इनका बचपन,स्कूली तथा कॉलेज का जीवन बीत गया।सत्रह वर्ष की उम्र में मैत्रेयी के पास ववाह ही एक मात्र मान सक और शारीरिक व्या भचारों से छुटकारा पाने के लए वकल्प था।डॉ. रमेश चन्द्र शर्मा का रिश्ता और प्रस्ताव कस्तूरी को पसंद आने पर मैत्रेयी का ववाह डॉ रमेशचन्द्र शर्मा के साथ निश्चित हो गया। वदाई के समय कस्तूरी ने अपनी बेटी को कतावें दी थी और कहा था लाली वहाँ जाने के बाद पीएच.डी. करने के बारे में सोचना।पति रमेशचंद्र शर्मा को दिल्ली के एम्स अस्पताल में नौकरी मलने के बाद वे दिल्ली में रहने लगे। मैत्रेयी जी का अ धकांश जीवन गाँव में व्यतीत होने के कारण दिल्ली जैसे महानगर में रहना थोड़ा-सा कठिन हुआ।कथाकार मैत्रेयी पुष्पा जी की बड़ी बेटी नम्रता, मझली मोहिता तथा सबसे छोटी सुजाता ये तीनों बेटियाँ अपने पता की तरह ही डॉक्टर हैं। मैत्रेयी पुष्पा का डॉ. सद्धार्थ से बातचीत करना और लोगों का बातें बनाने से मैत्रेयी के पति डॉ. शर्मा को अपमान महसूस होता था।डॉ. शर्मा

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 01, (January-March 2023)

की इन बातों से मैत्रेयी को उनका पुरुष भाव स्पष्ट नजर आता है।मे डकल की पढ़ाई करने वाली बड़ी बेटी 'नम्रता' ने ही सर्वप्रथम मैत्रेयी पुष्पा जी को लेखन के लए प्रोत्साहित कया |मैत्रेयी पुष्पा जी ने साहित्य की व भन्न वधाओं पर अपनी कलम चलाई ।इनके द्वारा र चत रचनाएँ इस प्रकार से है:-

उपन्यास - 'चाक', 'अल्मा कबूतरी', 'कस्तूरी कुंडली बसैं', 'इदन्नमम', 'स्मृति दंश', 'कहैं इशुरी फाग', 'झूला नट', 'बेतवा बहती रही'।

कहानियाँ - 'त्रिया हठ' (कहानी संग्रह), 'फैसला', ' सस्टर', 'सेंध', 'अब फूल नहीं खलते', 'बोझ', 'पगला गई है भागवती', 'छाँह', 'तुम कसकी हो बिन्नी?'।

कहानी संग्रह - ' चन्हार', 'ललमनियां'।

क वता संग्रह - 'लकीरें' शीर्षक से उनकी एक क वता संग्रह भी प्रका शत हो चुका है।

आत्मकथा - गु ड़या भीतर गु ड़या

यात्रा-संस्मरण - अगनपाखी

आलेख - खुली खड़ कयाँ

सम्मान और पुरस्कार:-

मैत्रेयी पुष्पा को अब तक कई सम्मान हा सल हो चुके हैं, जिनमें 'सुधा स्मृति सम्मान', 'कथा पुरस्कार', 'साहित्य कृति सम्मान', 'प्रेमचंद सम्मान', 'वीर संह जू देव पुरस्कार', 'कथाक्रम सम्मान', 'हिंदी अकादमी का साहित्य सम्मान', 'सरोजिनी नायडू पुरस्कार' और 'सार्क लटरेरी अवार्ड' प्रमुख हैं।

फ़ैसला कहानी में मैत्रेयी पुष्पा स्त्री की नई छ व प्रस्तुत करते हुए पुरुष प्रधान समाज में राजनीतिक ताक़त को अपना ह थयार बनाकर पुरूष समाज में स्त्री उद्धार के लए नवीन मार्ग प्रशस्त करती है ।वह अपने वोट की ताक़त से पुरूष मान सकता को धराशायी करने के लए दो पुरुषों को आमने -सामने खड़ा कर देती है ।वह जानती है क कॉटे से कॉंटा निकाला जा सकता है । स्त्री वमर्श को नई पहचान दिलाने की दिशा में राजनीतिक ताक़त ही एक ठोस क़दम है ।राजनीतिक ताक़त वोट में निहित है ।इस लए वोट की ताक़त को शस्त्र रूप में प्रयुक्त कर वह पुरूष शक्ति को मात देकर नारी जीवन को उच्च उठाने के संकल्प को नयी दिशा दिखाती है । फ़ैसला कहानी के कथानक के अध्ययन पर यह स्पष्टतः दृष्टिगोचर होता है क ' वसुमति ' कहानी की नायिका पात्र है । कहानी का सारा ताना-बाना वसुमती के इर्द - गर्द घूमता है । कहानी का आरम्भ और अन्त उसी के प्रसंग से होता है । कहानी का उद्देश्य भी वसुमती नायिका पात्र से सार्थक -साकार रूप प्राप्त करता है । वसुमति के मन में पुरूष समाज के प्रति वद्रोह परिस्थितियों से उत्पन्न हुआ है। वसुमति एक ववेकशील और जागरूक नारी है जो परिस्थितियों के समक्ष नतमस्तक नहीं होती ,उन्हें अपने ऊपर हावी नहीं होने देती, अ पतु अपने ववेक एवं संयम से समाधान निकालने में सक्षम है । फ़ैसला कहानी के आधार पर वसुमती के चरित्र चत्रण की वशेषताएँ इस प्रकार से है :-वसुमती पति धर्म का पालन करने वाली एक आदर्श पत्नी है ।वह अपने पति के वचारों से सहमत नहीं है, ले कन कभी भी खुलकर उनका वरोध नहीं करती ।रणवीर के अन्याय -भ्रष्टाचारों को देखकर दुखी हो जाती है ।अपने पति को समझाने का प्रयत्न करती है ले कन जब उसकी एक भी नहीं चलती तब

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 01, (January-March 2023)

वसुमती मन ही मन अपने पति की बातों का वरोध करती है ।ले कन एक आदर्श पत्नी की तरह एक सीमा में रहकर उन्हें समझाने का प्रयत्न करती है ,जब रणबीर चुनाव में हार जाते हैं उस वक़्त वसुमति अपने पति रनवीर को सांत्वना देने का का प्रयास करती है ।वह रणबीर को दिलासा देती है क आपने अपने प्रयास कए ,उसके बाद जो नियति का फ़ैसला उसे हमें मान लेना चाहिए ।वसुमती अपने पति धर्म से कभी भी भ

वमुख नहीं हुई ।उसने बोट का प्रयोग अपनी पति के वरोध नहीं कया ,अ पतु उसने अपने वोट का प्रयोग उस व्यक्ति के वरोध में कया जो गांवों में अन्याय -भ्रष्टाचार को बढ़ावा दे रहा था ।उसने अपने वोट का प्रयोग उस व्यक्ति के वरोध में कया जो मानवता को तार -तार कर रहा था ।हरदेई के केस में उसके पता का साथ देकर रणवीर ने दानवता का परिचय दिया ।वसुमति अन्याय- भ्रष्टाचार के वरुद्ध खड़ी हुई थी। अपने पति के वरुद्ध नहीं ।वसुमती ने अपने पति के मान -सम्मान को कभी भी ठेस नहीं पहुँचाई ,आंच नहीं आने दी ,कभी उसको अकेला महसूस नहीं होने दिया । जब वह चुनाव हार गया ,तब वसुमती रनवीर को सांत्वना देने का प्रयास करती है ।

“एकांत में माथे पर हाथ फेरा तो वे अ धक गंभीर हो उठे। चेहरा दयनीय हो आया।

थोड़ी देर में ही वे रेत में पड़ी मछली-से तड़पने लगे। समझने को कुछ शेष नहीं था मास्साब, मैं पराजय पर सांत्वना देने लगी, धीरज रखो। को शश करना तुम्हारा काम था, हार-जीत तो लगी रहती है।

दिलासा तो दे रही थी ले कन मेरा मन भी रुंध-खुंद गया। कभी उनके हाथ सहलाती, कभी पांव दबाती। भीतर से कुंडी बंद कर ली।

मास्साब, यह लखने की बात नहीं है, पति को धीरज देने का हर संभव प्रयत्न कया था मैंने। मन से मन और देह से देह मलाकर, ताप हरना चाह रही थी उनका।”

वसुमति भारतीय नारी की भाँति परंपरागत मूल्यों की रक्षा के प्रयत्न में आत्मदमन करती है ।वसुमति का पति रनवीर ही उसकी अ धकारों का प्रयोग करता है और उसे मात्र रबर स्टैम्प के समान दस्तख़त के लए प्रयोग करता है। वह आज्ञाकारिणी पत्नी सर और माथे पर पल्ला लेकर ही निकलती है ।वह अपने पति के सम्मान के लए अंदर ही अंदर स्वयं घुटती रहती है ।वसुमती पति का मान रखने का पूरा प्रयास करती है ।वह पंचायती चबूतरे पर नहीं जाना चाहती क्यों क रणवीर नहीं चाहता क उसकी पत्नी पंचायती चबूतरे पर जाएँ ! इसी प्रकार से पति रनवीर ये भी नहीं चाहता क वह घर -घर जाकर औरतों से मले तो वह अपनी इन दोनों इच्छाओं को दमन करने का प्रयास करती है । गाँव की प्रधान होने पर भी अन्याय के वरुद्ध अपने पति रणवीर के समक्ष अपना मुँह तक नहीं खोल सकती थी ।मन में उफनता ग़ुस्सा दूध के झाग की भाँति एकाएक ही ठंडा पड़ जाता था ,मन मसोस कर मन की आवाज़ को दबा कर मन ही मन दोहराती है क वह पति रणवीर की मनमानी पर अब मौन नहीं रहेगी । कसी ग़लत काग़ज़ पर वह हस्ताक्षर नहीं करेगी ।वसुमति की इसी स्थिति -इसी द्वंद्व पर प्रकाश डालते हुए मैत्रेयी पुष्पा जी लखती है क

“मैं ही पस्तहिम्मत थी या क पति की प्रतिछाया मेरे भीतर निवास करती थी, देहरी उलांघते ही कोई बरजने लगता, हम हैं तो सही। अब तक भी तो करते रहे हैं। तुम्हें क्या जरूरत है बाहर आने की?

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 01, (January-March 2023)

उत्तर में मन उपफनता। आक्रोश के सवाल की सीमा तक होंठ खुलते, मगर पत्नी होने के नाते सब कुछ सराने लगता। दूध के झाग-सा बैठ जाता वरोध।

मास्साब, मैंने कतने दिनों तक सोचा था क दस्तखत नहीं करूंगी। करने दो मनमानी।"

शक्षा व्यक्ति को मान सक रूप से सुदृढ़ बनाते हुए सही -ग़लत का निर्णय लेने की क्षमता उत्पन्न करती है । श क्षत व्यक्ति शक्षा का ढिंढोरा नहीं पटता अ पतु हर स्थिति को गहराई से समझने की क्षमता उत्पन्न करते हुए स्थिति का सकारात्मक पक्ष देखने की चन्तन क्षमता प्रदान करता है ।वसुमति पढ़ी - लखी नारी है।ईसुरिया वसुमती को कहती है क तुम अपने पति रणवीर से ज़्यादा पढ़ी लखी हो, ज़्यादा हो शयार हो । तुम प्रधान पद पर वजयी अपनी गुणवत्ता से हुई हो ना क तुम्हारे पति रणवीर के कारण। तुम रणवीर से बहुत ज़्यादा समझदार हो और हमने तुम्हें चुना है ,तुम्हारी योग्यता के कारण !तुम्हारी अच्छाई के कारण ! ईसुरिया निर्भीकतापूर्वक वसुमति और गाँव की औरतों के समक्ष वसुमति की पढ़ाई के साथ-साथ रनवीर के कुकर्मो पर प्रकाश डालते हुए कहती है:-

"सुन ले! सुनाने के लए ही कह रहे हैं हम। रनवीर एक दिन चाखी पीसेगा, रोटी थापेगा। और हमारी बसुमती, कागद लखेगी, हुकुम चलाएगी, राज करेगी।

है न बसुमती?

सांची कहना, तू ग्यारह कलास पढ़ी है न? और रनवीर नौ फेल? बताओ कौन हु सयार हुआ?"

हमारे यहाँ पर स्त्रियां कतनी भी पढ़ी - लखी क्यों नहीं हो जाए ! भारत सरकार स्त्रियों की उन्नति के लए उनके आत्मसम्मान जीवन के लए कतनी ही योजनाएं क्यों न बना ले ।सं वधान में नारी अ धकार के लए कतने ही पदों को आर क्षत कर दिया जाए। पुरुष प्रधान समाज में स्त्री कतनी भी उन्नति क्यों न कर लें ले कन उसके बाद भी घर -परिवार की ज़िम्मेवारी का दायित्व उसी के कंधे पर रहता है । सं वधान ने राजनीति में नारी के लए पद आर क्षत कए और नारी की उन्नति के लए ,नारी सशक्तिकरण के लए क़ानूनन दरवाज़े खोले गए ,ले कन पुरुष वर्ग में अ धकांश पति उसके अ धकारों का हनन करते हैं ।अब वह पत्नी को राजनीतिक अखाड़े में उतारता तो हैं पद पर अपनी पत्नी की जीत के लए प्रयास भी करता है ।ले कन उसके अ धकारों का प्रयोग उसके पति के द्वारा ही कया जाता है ।मात्र हस्ताक्षर के लए उसे प्रयुक्त कया जाता है ।इतना ही नहीं पत्नी को यह तक जानने का अ धकार नहीं क वह कस पर हस्ताक्षर कर रही है और कभी वह जानने का प्रयास भी करें तो पति आग बबूला हो जाते हैं। मात्र रबर स्टैम्प की तरह हस्ताक्षर के लए प्रयोग की जाती है ।सं वधान द्वारा प्रदत्त अ धकार सही अर्थों में उसे आज तक भी प्राप्त नहीं हुए है ।आज भी घर में चूल्हा- चौका उसी की ज़िम्मेवारी हैं ।राजनीतिक शक्ति का प्रयोग करने के लए नारी स्वतंत्र नहीं है ।इसी पर प्रकाश डालते हुए मैत्रेयी पुष्पा जी फ़ैसला कहानी में लखती है :-

"रनवीर रजिस्टर लए चारपाई पर बैठे थे। मैं कामों में उलझी थी। सवेरे का समय वैसे भी खाने-पीने से लेकर दूध-घी की सार-संभाल में निकल जाता है, ऊपर से मईदारों का कलेऊ-पानी।

वे आवाज दे चुके थे, शायद कई बार।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 01, (January-March 2023)

मैं फर भी खाली नहीं हुई।

सुनो, मैं लखत-पढ़त कब का निबटा चुका, तुम्हें दस्तखत करने का समय नहीं?"

वसुमति कुशल एवं व्यवहारिक नारी हैं ।प्रधान पद पर वजयी होने के बाद वह गाँव की औरतों का धन्यवाद करना चाहती है ,पति रनवीर की बंदिशों के बावजूद वह'पथनवारे' में जाकर गाँव की नारियों का धन्यवाद करती है ।'पथनवारा' औरतों के सभी प्रकार के सुख -दुःखों का साक्षी स्थान हैं जहाँ वे अपने सुख दुख की बात एक-दूसरे से कह -सुन लेते हैं ।यथा:-

"ब्लाक प्रमुख की पत्नी होने के नाते घर-घर जाकर अपनी बहनों का धन्यवाद करना जब संभव नहीं हो सका तो मैं 'पथनवारे' में जा पहुंची।'

'आप जानते तो हैं क हर गांव में पथनवारा एक तरह से महिला बैठकी का सुर क्षत स्थान होता है। गोबर- म ी से सने हाथों, कंडा थापते समय, औरतें अकसर आपबीती भी एक-दूसरे को सुना लेती हैं।'

'हमारे सुख-दुःखों की सर्वसाक्षी है यह जगह।'"

वसुमति एक दयावान स्त्री है ।उसके मन में दूसरों के प्रति दया भावना है ।दूसरों के दुखों को देखकर उसका हृदय द्र वत हो जाता है ।वह अपने पति की आज्ञा का पालन करने वाली स्त्री है। ले कन दूसरों के दुःख -पीड़ा को देख वह पति की इच्छा की चंता कए बिना उनकी सहायता करती हैं। हरदेई के केस में पंचायती चबूतरे पर पहुँचकर पंचों से मलकर उसे न्याय दिलाने का प्रयास करती है ।वसुमति अपने पति को स्पष्ट शब्दों में कह देती है क राम संह निर्दोष है ।हरदेई को न्याय दिलाने के फ़ैसले में वसुमती की दयालुता -न्याय प्रयता और निर्भीकता दर्शनीय है ।

"उस समय न जाने कैसे निर्णय ले डाला क ठिठके कदम अम्मां के संग चल पड़े। देववीर रोकता रह गया। फैसला करवाकर आई तो अपूर्व तोष में भीगी हुई थी। अनाम आर्द्रता और प्रे मल निष्ठा के साथ लया निर्णय। प वत्र मंदिर-सा लगा था पंचायत वाला चबूतरा, जिस पर बैठकर रुके हुए सड़े जल को जैसे काटकर बहा दिया हो मैंने। संपूर्ण गंदगी रिता दी हो अपने हाथों से। अब मानो नई वाटिका का बीजारोपण होगा वहां।"

बासमती को पता चलता है क हरदेई ने कुएँ में कूदकर आत्महत्या कर ली है ,तब वसुमती मन ही मन सोचती है की रातों -रात पंचों का निर्णय कैसे बदल गया ?वह अंदर ही अन्दर टूट जाती है- बिखर जाती है ,उसे कुछ भी समझ नहीं आ रहा क क्या हुआ ?कैसे हुआ ?हरदेई की आत्महत्या से आहत ईसुरिया जब वसुमती को बुलाने आती है और उसे पंचों के फ़ैसले को बदलने की बात बताती है तो वसुमति के मन में वचारों का जो तूफ़ान उठता है,वह तूफ़ान उसके मन रूपी काँच को टुकड़े-टुकड़े कर देता है।ईसुरिया वसुमति को पुकारते हुए कहती हैं क:-

"ओ रन्ना की दुलहन! ओ बसुमतिया...

अरी बाहर तो आ...

वरथा है तेरी वद्या! खाक है तेरी पढ़ाई! और राख हो गई तेरी परधानी!

यह कातर करुण स्वर!

यह रोदन की लय में छटपटाती ईसुरिया!

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 01, (January-March 2023)

वलापात्मक करुणा सनी प्रकं पत आवाज...! हाथ में थमा प्याला थरथराने लगा। न जाने क्या हो पड़ा।

अरी जल्दी आ जा! बड़े पीपरा तरें कुआं में कूद के हरदेई ने परान तज दिए। मैं काठ हो गई।

उलटी तरफ भागने लगी रनवीर के कमरे की ओर। टांगें कांप रही थीं। सांसों में अवरोध टकरा रहा था।

वश्वास नहीं हो रहा था, पर भीतर ही भीतर कोई अदृश्य, अस्पष्ट बसूला आत्मा को छीलने में लगा था।

रनवीर बिस्तर पर नहीं थे।

देह शला से भी भारी होने लगी। पांव गतिहीन...। निढाल हुई आंगन में ही बैठ गई।

कसने उलट दिया निर्णय? रात ही रात में सब कुछ वपरीत कैसे हो गया? पंचों का फैसला रद्द कसने कया? कसने रोका उसे पति के संग जाने से?"

वसुमति का पति रनवीर उसके पद का दुरुपयोग कर गाँव में अन्याय -भ्रष्टाचार को बढ़ावा दे रहा है ।राम संह ,हरदेई,राम कसुन कुम्हार के प्रति होने वाले अन्याय को देखकर वसुमति तिल मला उठती है । वसुमती कुछ करने की सोचे उससे पहले ही उसका पति रणवीर उसे चकनी चुपड़ी बातों में बहलाने का प्रयास करता है ।रणबीर नहीं चाहता क वसुमती अपने अ धकारों के प्रति जागरूक हो !वह न्याय का साथ दे ! रनवीर पुरूष और नारी में भेदभाव भी करता है ।वह नारी अ धकारों का शोषण करने के साथ-साथ अन्याय-भ्रष्टाचार को बढ़ावा देने वाला पात्र है ।वह अपनी पत्नी को इज़्ज़त नहीं देता ।ले कन अपने स्वार्थ के लए उसे बहलाने -फुसलाने के लए

कहता है क-

"वे समझाते रहे, पति-पत्नी में कोई अंतर नहीं होता है? पगली, एक-दूसरे के लए ही जीते-मरते हैं। गांव वालों को लेकर वरथा अपने मन में क्लेश पाल बैठी।

हमसे जलते हैं सब। देखा नहीं जाता क पति प्रमुख और पत्नी प्रधान। चाहते हैं क तुम द्वार-द्वार डोलो। लौंडे-लपाड़े हंसी-ठ ा करें। लोगों को कहने का मौका मले क रनवीर की घरवाली पराए मर्दों के बीच..."

वसुमती एक श क्षत नारी होने के साथ साथ एक नेक दिल इंसान भी है ।इस लए जब वह प्रधान पद पर चुनी जाती है तो वह अपने मन में गाँव के लोगों की भलाई के लए अनेक प्रकार की योजनाएं बनाती है ।वह अपने मन में गाँव के सुधार के लए स्वप्न संजोती है ।जब जवाहर रोज़गार योजना से प्राप्त धन का गाँव के वकास के लए प्रयोग नहीं कया जाता ,तो वसुमती के मन में वद्रोह सैलाब की भाँति उमड़ने लगता है ।गाँव के वकास के लए सरकार से जो धन मलता है उसका प्रयोग गाँव के वकास के लए न करके लोग अपनी जेबें भरने के लए करते हैं ।प्रधान-पंचायत सब की मलीभगत से पैसा सामान्य जनता के हित के लए प्रयोग नहीं कया जाता ,अ पतु अपनी जेबों को गर्म करने के लए कया जाता है ।सरकारी योजनाओं का लाभ सामान्य जनता को प्राप्त नहीं होता ।इसी अन्याय और भ्रष्टाचार पर प्रकाश डालते हुए पुष्पा जी लखती है क-

मजूर आए थे मेरे पास, कहते थे क अभी तक गारा-पत्थरों की ढुलाई की मजदूरी...?

गांव की औरतें ताना देती हैं क भली हुई तुम प्रधान, अपने द्वारे पर ही पक्का खरंजा करा लया। अपनी गली ही पत्थरों से जड़ ली। हमसे क्या बैर था बहन क कीचड़ में ही छोड़ दिए।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 01, (January-March 2023)

बच्चों को स्कूल भेजते डर लगता है, छत आज गरी क कल। आपके अलावा कौन सुधरवा सकता है उसे। कौन कहेगा क यह परमुख का गांव है? गड्ढों में पानी, पानी में मच्छर। कूड़ा-कचरा। घर-घर जूड़ी-ताप। कुछ दवा-दारू होती। गड्ढों की पुराई, जैसे लालपुर में।

कुछ भी तो नहीं हुआ जवाहर रोजगार योजना के पैसे से?"

वसुमति जमीन से जुड़ी व्यवहारिक स्त्री है ।वह गाँव के लोगों की तकलीफ़ समझती हैं।उनके दु:ख-दर्द तकलीफ़ को दूर करना चाहती है ।वह चाहती है क गाँव की सड़कें पक्की हो ,बच्चों की पढ़ाई के लए अच्छी पाठशालाएँ हो ।स्त्रियों को चूल्हा-चौका में सब सु वधाएँ प्राप्त हो ।सभी की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति हो ।प्रधान पद पर वजयी होने के बाद जब जवाहर रोज़गार योजना से गाँव के लए धन मलता है ।उसके मन में गाँव वकास के लए जो स्वप्न-भावनाएँ -ख़्वाब पनप रहे थे उसी पर प्रकाश डालते हुए कवयित्री लखती हैं-

"इस रुपए को जिस दिन हस्ताक्षर करके लाई थी, उन दिनों स्वर्ग के सपनों में वचरा करती थी। चमचमाते स्कूल और पक्की ग लयों की चाह थी मन में। वर्षा की रौ में ढहे झोंपड़ों को संवार देने की आकांक्षा की थी। हाथ पर हाथ धरे बैठे बेरोजगारों के घर दुर्दिनों में चूल्हा जलाने की बात सोची थी। बीमारों के दर्द को हरने के लए कुछ दवा-गोली की साध थी।"

ग्राम वकास का धन कुछ लोगों की जेब में चला जाता है ।वसुमति को हस्ताक्षर के लए कठपुतली के समान उपयोग कया जाता है ।गाँव की दयनीय दशा से आहत वसुमति जवाहर रोज़गार योजना के तहत गाँव सुधार हेतु धन लेकर आयी थी उस वक़्त वह काफ़ी खुश थी ।उसने गाँव के सुधार के लए काफ़ी योजनाएं बनायी थी,उसकी सारी योजनाएं -कल्पनाएँ उसका पति धराशायी कर देता है । उसकी सारी कल्पनाएं टूट जाती है -बिखर जाती है ।वसुमति पति रणवीर के अन्याय -भ्रष्टाचार से ग्राम वकास में डाली गई बाधाओं से खन्न हो जाती है ,कुछ न कर पाने की ववशता उसे अंदर ही अंदर कचोटने लगती है ।यह कचोट उसे कमज़ोर नहीं बनाती है अ पतु उसे उठ खड़े होने के लए ,लड़ने के लए प्रेरित करती है ।वह राजनीतिक अखाड़े में उतरकर पुरुष प्रधान समाज को नारी अस्मिता को स्वीकार करने के लए बाध्य करती है ।वसुमती ववेक से काम लेती हैं ।रणवीर की भ्रष्ट नीतियों को रोकने के लए ब्लाक प्रधान के चुनावों में अपनी पति के वरुद्ध अपने वोट का प्रयोग कर अन्याय के वरुद्ध बुलंद क़दम उठाती है ।वह नारी जाति के आँसुओं और प्रत्याशा को एक साथ गूँथकर अपने वोट का प्रयोग अपने पति के वरुद्ध करती है ।यह उसकी नयी चेतना है ,जिसके प्रकास में नारी अपने अ धकारों को और समाज में अपनी प्रतिष्ठित स्थान को प्राप्त कर सकेगी ।

"उन्हीं अंतरंग क्षणों में बाहर बतियाता देववीर का स्वर मेरे कानों पर हावी हो गया, अगर एक बोट और होता तो भइया हारते नहीं। उस लुहरटा के बराबर आ जाते।

एक बोट!

वश्वास नहीं कर सकी मैं।

सहसा मेरे भीतर सब कुछ डांवाडोल होने लगा।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 01, (January-March 2023)

ओ मेरे अग्नि देवता! ओ सप्तपदी दिलाने वाले महापं डत! ओ मेरे जननी-जनक! और मास्साब आप, मेरे गुरुवर...आपने मुझे सुख-दुःख की सहभा गनी, अर्धान गनि, सहचरी बनाकर रनवीर की पत्नी के रूप में वदा कया था।

ले कन मैं क्या करती?

अपने भीतर की ईसुरिया को नहीं मार सकी।"

पुष्पा जी स्त्री सशक्तिकरण की अवधारणा को घर- परिवार की सीमाओं से बाहर निकालकर सामाजिक - राजनीतिक सरग र्मयों के मध्य ले जाती है । स्त्री अस्मिता आंदोलन की केवल बात ही नहीं करती अ पतु स्त्री चेतना की नई छ व प्रस्तुत करती है ।नारी की इस नई चेतना को व्यक्त करना ही फ़ैसला कहानी का प्रमुख लक्ष्य है ।वसुमति अपने पति के वरुद्ध वोट डालने का साह सक क़दम उठाकर अपने मुक्त होने का उद्घोष करती है ।वसुमति ने चुप्पी के साथ राजनीतिक अखाड़े को अपना ह थयार बनाकर नारी चेतना को नई दिशा दिखाई है। फ़ैसला कहानी का अध्ययन करने के बाद यह स्वतः ही स्पष्ट हो जाता है क मैत्रेयी पुष्पा जी ने कहानी का जो मूल उद्देश्य रखा है वह उद्देश्य वसुमति के चरित्र के माध्यम से ही पूर्णता प्राप्त करता है ।इस लए वसुमती कहानी की प्रमुख पात्र हैं ।डॉ रोहिणी अग्रवाल जी फ़ैसला कहानी के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए लखती है-

उसका यह क़दम बेहद सांकेतिक हैं -मुक्त होने की साह सक लड़ाई का उद्घोष ,भ गनीवाद के वस्तार का वश्वास, द लत अस्मिताओं के सशक्तीकरण का मोर्चा ।वसुमती की चुप्पी में दिलेरी गूँथकर मैत्रेयी पुष्पा जिस नई स्त्री को लाना चाहती है ,ले खका उसे राजनीतिक अखाड़े में उतार कर पतृसत्तात्मक व्यवस्था से स्त्री को 'मनुष्य 'के रूप में देखे जाने की माँग करती है क्यों क क़ानून और नीतियों का निर्धारण यही होता है ।"

सन्दर्भ सूची-

(1) कथाक्रम:संपादक डॉ रोहिणी अग्रवाल 'फैसला':मैत्रेयी पुष्पा पृष्ठ:110
खाटू श्याम प्रकाशन
(2)कथाक्रम:संपादक डॉ रोहिणी अग्रवाल 'फैसला':मैत्रेयी पुष्पा पृष्ठ:100
खाटू श्याम प्रकाशन
(3)कथाक्रम:संपादक डॉ रोहिणी अग्रवाल 'फैसला':मैत्रेयी पुष्पा पृष्ठ:97
खाटू श्याम प्रकाशन
(4)कथाक्रम:संपादक डॉ रोहिणी अग्रवाल 'फैसला':मैत्रेयी पुष्पा पृष्ठ:100
खाटू श्याम प्रकाशन
(5)कथाक्रम:संपादक डॉ रोहिणी अग्रवाल 'फैसला':मैत्रेयी पुष्पा पृष्ठ:94-95
खाटू श्याम प्रकाशन
(6)कथाक्रम:संपादक डॉ रोहिणी अग्रवाल 'फैसला':मैत्रेयी पुष्पा पृष्ठ:103
खाटू श्याम प्रकाशन

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 01, (January-March 2023)

(7)कथाक्रम:संपादक डॉ रोहिणी अग्रवाल 'फैसला':मैत्रेयी पुष्पा पृष्ठ:107
खाटू श्याम प्रकाशन
(8)कथाक्रम:संपादक डॉ रोहिणी अग्रवाल 'फैसला':मैत्रेयी पुष्पा पृष्ठ:106
खाटू श्याम प्रकाशन
(9)कथाक्रम:संपादक डॉ रोहिणी अग्रवाल 'फैसला':मैत्रेयी पुष्पा पृष्ठ:101
खाटू श्याम प्रकाशन
(10)कथाक्रम:संपादक डॉ रोहिणी अग्रवाल 'फैसला':मैत्रेयी पुष्पा पृष्ठ:102
खाटू श्याम प्रकाशन
(11)कथाक्रम:संपादक डॉ रोहिणी अग्रवाल 'फैसला':मैत्रेयी पुष्पा पृष्ठ:111
खाटू श्याम प्रकाशन
(12)कथाक्रम:संपादक डॉ रोहिणी अग्रवाल भू मका खाटू श्याम प्रकाशन